

क्या दालों के उत्पादन के संदर्भ में भारत आत्मनिर्भरता तक पहुँच गया है?

संदर्भ

पछिले कुछ समय तक भारत को, खाद्य तेल और दालों के आयातक के रूप में देखा जाता था, जिनका नरितर और बढ़ती हुई मात्रा में आयात किया जा रहा था। 2010-11 और 2016-17 के बीच खाद्य तेल की आयात कीमत \$4.72 बिलियन से बढ़कर \$10.89 बिलियन हो गई, जबकि दालों के संदर्भ में यह कीमत \$2.25 बिलियन से बढ़कर \$4.24 बिलियन हो गई। मार्च 2018 में समाप्त हुए वित्त वर्ष के दौरान खाद्य तेल का आयात मूल्य बढ़कर \$11.64 बिलियन हो गया। लेकिन अब दालों के संबंध में परविरतन के संकेत मलि रहे हैं।

परमुख बदि

- इस परविरतन का कारण 2017-18 में आयात मूल्य में गरिवट नहीं है, बल्कि इसका कारण घरेलू उत्पादन में हुई वृद्धि है।
- आँकड़ों के अनुसार, पछिले दो वर्षों में देश के दाल उत्पादन में काफी बढ़ोतरी हुई है। इस दौरान दाल उत्पादन बढ़कर लगभग 23-24 मिलियन टन हो गया है।
- यह उत्पादन पछिले दो वर्षों से पूर्व के दो वर्षों (2014-15 और 2015-16) के 16-17 मिलियन टन की तुलना में काफी अधिक है, जबकि देश के कई बड़े दाल उत्पादक क्षेत्रों में सूखे की परस्थितियाँ थीं।
- पछिले कुछ समय के 18 मिलियन टन के औसत के सापेक्ष भी देखें तो, उत्पादन में लगभग एक-तहिाई की वृद्धि हुई है जो छोटी मात्रा नहीं है।
- यदि 23-24 मिलियन टन को घरेलू दाल उत्पादन का नया सामान्य स्तर मानें तो इसके महत्त्वपूर्ण प्रभाव होंगे।
- वाशगिटन स्थति इंटरनेशनल फ्रूड पॉलिसी रसिर्च इंस्टिट्यूट के लयि प्रकाशति कयि गए एक हालयिा पेपर 'चेंजगि कंजम्पशन पैटर्न एंड रोल्स ऑफ पल्सेज इन न्यूट्रीशन एंड फ्यूचर डमिांड प्रोजेक्शंस' में भारत में 2030 तक दालों की मांग का अनुमान लगाया गया है।
- इस पेपर में दालों की घरेलू मांग का तीन अलग-अलग आय वृद्धि परदृश्यों में अनुमान लगाया गया है।
- वर्तमान जीडीपी वृद्धिदर पर मांग 2010 के 18.02 मिलियन टन से बढ़कर 2020 में 21.87 मिलियन टन तक जा सकती है और 2030 तक इसके 26.58 मिलियन टन तक पहुँचने की उम्मीद है।
- यदि जीडीपी वृद्धिदर कम रहती है (मौजूदा दरों से 25% कम), तो मांग 2020 में केवल 21.40 मिलियन टन पर पहुँचेगी और 2030 में इसका स्तर 25.22 मिलियन टन होगा।
- यदि जीडीपी वृद्धिदर अधिक रहती है (वर्तमान दरों से 25% अधिक), तो मांग 2020 में 22.36 मिलियन टन और 2030 में 28.07 मिलियन होगी।
- यहाँ दो बातों पर ध्यान दयिा जाना बेहद आवश्यक है। प्रथम, पछिले दो वर्षों में देश में हुए 23-24 मिलियन टन के उत्पादन ने पहले ही इंस्टिट्यूट द्वारा अनुमानति 22.36 मिलियन टन के आँकड़े को पार कर लयिा है।
- द्वतीय, यदि अगले दशक में उत्पादन में आगे कोई और बढ़ोतरी नहीं होती है, तो भी देश को 2030 में वार्षकि रूप से 4 मिलियन टन से अधिक का आयात नहीं करना पड़ेगा।
- लेकिन यदि उत्पादन में पछिले दो सालों की तरह बढ़ोतरी होती रहती है, तो भारत आयातक के बजाय, दालों का नरियातक बन सकता है, जसिकी कुछ समय पहले तक कसिी ने कल्पना भी नहीं की होगी।